ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

ललित कलाओं के अन्तर्सम्बन्ध और काव्य–कला की जुगलबंदी

डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला [1]
[1] एसोसीएट, प्रोफेसर चित्रकला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ

मुख्य शब्द – ललित कलाओं, काव्य–कला, जुगलबंदी

Cite This Article: डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला. (2019). "ललित कलाओं के अन्तर्सम्बन्ध और काव्य–कला की जुगलबंदी." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 7(11SE), 25-39. https://doi.org/10.5281/zenodo.3585022.

प्रकृति स्वयं एक विशाल फलक है। यही अद्भुत संयोजन एक महाकाव्य तो है ही, एक विराट दृश्य चित्र भी है। इसमें काव्य के रस, छन्द और अलंकार है तो विविध रंग और रूपाकार भी हैं तभी तो कविता एक जगमगाता बिम्ब है तो चित्र एक जगमगाती सजीव कविता। दोनों की अनुभूति अन्तस में गुनी जाती है। सभी कलाएं अनुभूति स्तर पर समान होतीं हैं और माध्यमों में व्यक्त होकर विभक्त हो जातीं हैं फिर चाहे कलाकार कहीं का हो।

कलाओं के तात्विक विश्लेषण से पता चलता है कि सभी ललित कलाओं के अन्तःसम्बन्ध बहुत गहरे हैं और ये सदैव एक दूसरे को प्रभावित और सम्पन्न करते रहें हैं। यदि शब्दों के अर्थ की गहनता है , तो रेखाओं का अपना लालित्य है, यदि सुरों का अपना ब्रह्मांड है तो मुद्राओं का अपना भाव लोक है, यदि पत्थरों का एक लयात्मक स्वरूप है तो बिम्बों का अपना एक आकार बोध है। कलाओं में चित्रकला तो काव्य के समानान्तर ही विकसित हुई है।माध्यम के अनुसार सभी ललित कलाओं का अपना–अपना अस्तित्त्व है। आदि काल में अपने को व्यक्त करने के लिए यहीं कलाएं उसकी स्थूल भाषाएं थी। इनकी स्थापना के बाद भी मनुष्य वर्षों ऐसे शक्तिशाली माध्यम की खोज में लगा रहा होगा। जिसके द्वारा वह एक अपने सम्पूर्ण चिन्तन को व्यक्त कर सकता था। उसी के परिणाम स्वरूप उसे शब्द मिला होगा।

कालान्तर में उसने शब्द की शक्ति को पहचाना और भाषा का विकास किया। निश्चित ही यह ऐसा सूक्ष्म और सशक्त माध्यम है। जिससे गहनतम अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति सम्भव है। मनुष्य ने जहां एक ओर भौतिक शक्ति को पहचाना वहीं उसने अपनी आध्यात्मिक शक्ति को भी जगाया। जहां भौतिक शक्ति की सूक्ष्मतम इकाई ''परमाणु'' की दिव्य शक्ति उसके हाथ लगी, वहीं आध्यात्मिक शक्ति की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मतम इाकई ''शब्द'' की शक्ति को भी उसने जाना। परमाणु में पूरा भौतिक जगत समाया है और शब्द में पूरी आध्यात्मिक शक्ति की चेतना समाहित है। इसीलिए ''शब्द'' को ब्रह्म कहा गया है। काव्य और चित्रकला के सम्बन्धों में प्रमुख रेखा और शब्द का अन्तःसम्बन्ध भी है जैसा कि विद्वानों का मत है कि चित्रों से ही भाषा विकसित हुई है। अर्थात् रेखा का परिष्कृत रूप ही शब्द है। इसीलिए शब्द रेखा से सूक्ष्म और सशक्त है। रेखा यदि ''अणु'' है तो शब्द ''परमाणु'' इसीलिए इसकी शक्ति अनन्त है। भौतिक जगत् में जो स्थान ''परमाणु'' का है, चेतन जगत् में वही स्थान ''शब्द'' का है। एक ओर जहां 'परमाणु'' में प्रलय छिपी है वहीं दूसरी ओर ''शब्द'' में लय छिपी है। लय और प्रलय का संतुलन ही सृष्टि की सत्ता है। परमाणु जब

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

विश्लेषित होता है तो उससे अनन्त भौतिक ऊर्जा निकलती है और जब शब्द विश्लेषित होता है तो उससे वेद, पुराण और उपनिषद के रूप में अनन्त आध्यात्मिक ऊर्जा प्रकट होती है। जहां परमाणु का विश्लेषण भौतिक ऊर्जा बिखेरता है वहीं ''शब्द'' का विश्लेषण भावों का संश्लेषण करके अनन्त चेतन ऊर्जा का प्रसार करता है। परमाणु भौतिक जगत को तोड़ता है और शब्द भाव जगत को जोड़ता है। परमाणु विखण्डित हो कर नष्ट हो जाता है और शब्द परिभाषित होकर जीवित हो उठता है इसीलिए परमाणु नाशवान है और शब्द अनिवनाशी है। विज्ञान की अब तक की सबसे बड़ी खोज परमाणु शक्ति है और भाषा की अब तक की सबसे बड़ी खोज शब्द शक्ति हैं इसीलिए भाषा में मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान निहित है और इसी का कला रूप कविता है। अतः कविता तो सभी कलाओं में सर्वोपरि ही हैं किन्तु चित्र इसकी आत्मा में सदैव विद्यमान रहता है बिम्ब रूप में।

भारतीय मनीषियों ने कला अनुभूतियों को नौ रसों में विभाजित करके मानव मन का इतना सुन्दर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। जितना विश्व की किसी भाषा में उपलब्ध नहीं है। अनुभूतियों का सारा मनोविज्ञान इन्हीं नौ रसों में समाया हुआ है जिसकी सुन्दर और पूर्ण अभिव्यक्ति काव्य के माध्यम से ही सम्भव है। इसके बाद चित्रकला में भी रसों की अभिव्यक्ति हुई है। चित्रकला आदिकाल से ही काव्य के बहुत निकट रही है, उसकी शक्ति का निरन्तर विकास हुआ। चित्रकला में भी साहित्य की लगभग सभी विधाए मिलतीं हैं, जिनमें ललित चित्रण, व्यंग्य चित्रण, रेखा चित्रण, कथा चित्रण आदि आती है। इसीलिए चित्र और काव्य की जुगल बन्दी आदि काल से चली आ रही है, जो समसामयिक में सदैव फलीभूत रही है।

क्षेमेन्द्र ने कहा है कि कवियों के लिए चित्रकला का ज्ञान अति आवश्यक है। और चित्रकला के साथ–साथ अन्य ललित कलाओं का ज्ञान भी आवश्यक बताया है।

आगे चलकर भरत के 'नाट्यशास्त्र', राजशेखर की 'काव्यमीमांसा' और अभिनवगुप्त की कृतियों में प्रसंगवश ललितकलाओं के अन्तःसम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है। **राजशेखर** का मत है कि यद्यपि काव्य या साहित्य विद्या है और कलाएं उपविद्या है तथापि काव्य और कलाओं के बीच एक अन्तःसम्बन्धों है, क्योंकि कलाओं के सन्निवेश से काव्य को जीवन मिलता है।

''शब्दार्थयोर्ययथावत्सहभावेन विद्या साहित्य विद्या।
उपविद्यास्तु चतुःषष्टि
ताश्चकला इति विदग्धवादः।
स आजीवः काव्यस्य।

अर्थात् – शब्द और अर्थ सहभाव को बताने वाले विद्या साहित्य विद्या कहलाती हैं। इस विद्या की चौसठ उपविद्याएं है। जिन्हें विद्वान कला कहते हैं। ये उपविद्याएं या कलाएं काव्य का जीवन है। अतः राजखेर ने कवि–चर्चा का विवेचन करते समय कवियों की कलाओं के अनिवार्य अध्ययन का निर्देश दिया है–

गृहीत विद्योपविद्यः काव्यक्रियाए प्रयतेत।
नामधातपरायणे अभिधानकोशः छन्दोविचितिः
अलंकारतन्त्रं च काव्य विद्याः
कलावस्तु चतुःष्टिरूपविद्याः[1]

[1] राजशेखर, काव्यमीमांसा, अनुवादक, पण्डित केदारनाथ शर्मा सारस्वत, बिहार–राष्ट्रभाषा, परिषद, पटना, दशम, अध्याय, पृ. 121

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

अर्थात काव्य विद्या के शिक्षार्थियों को चाहिए, पहले काव्योपयोगिनी विद्याओं और काव्य की उपविद्याओं का भली–भांति अध्ययन करके काव्य रचना की ओर प्रवृत्ति करें। व्याकरण, कोष, छन्द, और अलंकार। ये चार काव्योपयोगी मुख्य विधायें हैं। चौसठ कलाएं काव्य की उपविधाएँ है। आचार्य वामन ने भी ''काव्यालंकार सूत्रवृत्ति'' में काव्य के उत्कर्ष के लिए अन्य कलाओं के साहाय्य का निर्देश किया है–

कलाशास्त्रेभ्यः कला तत्त्वस्य संवित्।
कला गीत नृत्य चित्रादि कास्तासामभिधायकानि शास्त्राणि
विशाखिलादिप्रणीतानि कला शास्त्राणि।
तेभ्यः कला तत्त्वस्य संवित् संवेदनम्।
न हि कलातत्त्वानुपलब्धौ कला वस्तु सम्यक् निबंद्धु शक्यमिति।

अर्थात् – कलाशास्त्रों द्वारा कला के तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। कला गाना, नाचना और चित्र आदि है। उनका प्रतिपादन करने वाले विशाखिल आदि रचित शास्त्र कलाशास्त्र कहलाते है। उन कलाशास्त्रों से कलाओं के तत्त्वों का संवित् अर्थात् ज्ञान करना चाहिए। कलाओं के तत्त्व को समझें बिना काव्य में कला सम्बन्धी वस्तु का भली प्रकार वर्णन करना सम्भव नहीं हैं इसलिए कलाओं का ज्ञान कवि के लिए आवश्यक हैं

काव्य और चित्रकला के अन्तःसम्बन्धों के विषय में पश्चिम के विद्वानों का मत तो प्रचलित ही है कि चित्र मूक कविता होती है और कविता सवाक चित्र होता है। प्लेटों और अरस्तु ने भी इसी की पुष्टि की है। अरस्तु ने अपने ''पोयटिक्स'' में काव्य कला का तात्विक साम्य चित्रकला के साथ दिखलाया भी है। आगे चलकर साम्य के इसी सिद्धान्त को ''सिसरो'', क्विण्टिलियन होरस आदि ने और स्पष्ट किया गया है।

पाश्चात्य धारणाओं के अनुसार सौन्दर्य की देवी वीनस है, जिसकी मूर्ति विश्व प्रसिद्ध है, चित्रकारों ने भी वीरस के रूप वैभव को चित्रित किया है, कवियों ने वीनस के इसी चित्रित सौन्दर्य से प्रेरित होकर काव्य की रचना की है। चित्रकार **राफेल** काव्य से किए गए विषयों को चित्रित करने में अद्वितीय था। अर्थात् अभिव्यक्ति पद्धति और भावना के समय माध्यम स्वरूप ऐन्द्रिय प्रतीति के भेद के अलावा इन दोनों कलाओं में कोई तात्विक भेद या पार्थक्य नहीं है। इस प्रकार कविता और चित्रकला के अन्तःसम्बन्धों की दृष्टि से काव्य और चित्रकला में विषयवस्तु का प्रभूत साम्य विचारणीय महत्त्व रखता है। [2]

काव्य और चित्रकलाओं में संगति का तात्विक महत्त्व विशेष है, काव्य में संगीत ध्वनियों और वर्णों के उच्चारण सौन्दर्य से निर्मित होती है और चित्रकला में यहीं संगित विभिन्न आकृतियों या रंग, रेखाओं के अनुपात से बनती है।[3] चित्रकला के छः अंगों में से तीन अंग तो काव्यकला में स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। ''वात्स्यायन कृत ''कामसूत्र'' के प्रथम अधिकरण के तृतीय अध्याय की टीका में यशोधर पण्डित ने चित्रकला के इन षडांगों पर विचार किया गया है।[4] इनमें तीन अंग भाव, लावण्य–योजना और सादृश्य काव्य में भी महत्त्व रखते है। चित्रकला के षडांगों पर **अवनीन्द्र नाथ ठाकुर** ने भी अपना मत व्यक्त किया है– ''चित्र तब

2 सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व, डॉ. कुमार विमल, पृ. 34

3 यहां यह ध्यातव्य है कि चित्रकला ही नहीं, सभी दृश्य कलाओं में संगति, विशेषकर अनुपात की संगति विद्यमान रहती है। दृश्य कलाओं में संगति पैदा करने वाले अनुपात को हम वास्तु–अनुपात कह सकते है और श्रव्य कला, विशेषतः संगीत में 'संगति'' पैदा करने वाले अनुपात को हम लयात्मक अनुपात कह सकते है। स्वर के अन्तरालों पर निर्भर इसी लयात्मक अनुपात को लक्ष्य करके पाइथागोरस ने अपने प्रसिद्ध सिद्धान्त ''थ्योरी ऑफ न्यूमेरिकल प्रोपोर्शन'' को प्रवर्तित किया गया था।

4 रूपभेदाः प्रमाणानि भाव लावण्य योजनम्।
सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रम् षडांगकम्।।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

बनाता है, जब चित्रकार की अन्तर्निहित उदयकामना या अभिव्यक्ति वेदना छन्द के नियमों से अपने को बांधकर अन्तर्बाह्य दो प्रकार से अपने को रसोदय में परिणत करती है। शब्द चित्र, संगीत, वाच्यचित्र, कविता, दृश्यचित्र, पट और मूर्ति आदि कोई भी सृजन की इस स्वाभाविक प्रक्रिया का अनुसरण किये बिना अभिव्यक्त हो ही नहीं सकते। अगर कुछ इस स्वाभाविक प्रक्रिया का अतिक्रमण कर उदय होता है, तो उसे संगीत, कविता या चित्र नहीं कहुंगा।''[5] अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने छन्द को ललित कलाओं का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग माना है।[6] क्योंकि संगति के अर्थ में छन्द रंगों में भी रहता है। जिसे रंग संगति (कलर–हार्मनी) कहते हैं। बंगला में इसके लिए ''वर्ण–छन्द'' शब्द का प्रयोग होता है। वर्ण चित्रकला का उपादान है और छन्द काव्यकला का एक प्रमुख अंग है।''..........वर्ण छन्द ऐसी चीज़ मान लेने से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि वर्ण और छन्द के समीकरण की एक सम्मिलन भूमि भी है, जहां पहुंचकर चित्र काव्यधर्मी और काव्य चित्रधर्मी बन जातें हैं।''[7] **शैली** ने रंग को कविता का ''इन्स्ट्रूमेन्ट एण्ड मैटेरियल'' कहा है।[8] रंग प्रधानतः चित्रकला का उपादान है फिर भी काव्य के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि एक लम्बी अवधि से कलाओं में प्रयुक्त होते – होते विविध प्रकार के रंगों ने अपनी एक निश्चित अर्थवत्ता अर्जित कर ली है।[9]

आदिकाल से काव्य और चित्रकला समानान्तर विकास की ओर बढी हैं, अतः जिन विषयों ने काव्य को अधिक प्रभावित किया है। काव्य के उत्कृष्ट भावों को चित्रकला में प्रतिपादित करने की परिपाटी चली थी। सबसे पहले गीतगोविन्द के कुछ मार्मिक भावों को चित्रों में उपस्थित किया गया।[10]

यामिनी राय और **चार्ज कीट** ने भारतीय काव्य में वर्णित कृष्ण सम्बन्धित भावों को ही अपना चित्रकला विषय बनाया। **चार्ज कीट** ने अपने चित्रकृतियों में विशेषकर गीत–गोवनिद के भाव चित्रों को प्रस्तुत किया है। उसके चित्रों पर कृष्ण काव्य का विशेष प्रभाव इसलिए पड़ा क्योंकि उन्होंने गीत गोविन्द का अनुवाद किया था। गीत गोविन्द के अनेक मनोहारी भाव उसके संस्कार में समा गये थे। जिनकी सतत् अभिव्यक्ति उसके चित्रों में पायी जाती है।

पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य और चित्रकला पर बहुत विस्तार से विचार किया है। वहां साहित्य, चित्रकला के प्रति बहुत सजग रहा है। विशेषकर चित्रकारों की प्रदर्शनियों की समीक्षा काव्य समीक्षा की तरह ही की जाती है। इसीलिए यूरोप की आधुनिक चित्रकला ने विश्व की कला को प्रभावित किया है। और चित्रकला के वादों का निर्धारण भी साहित्यकारों की ही देन है। इसीलिए वहॉ चित्रकार कवियों से और कवि चित्रकारों से बहुत प्रभावित रहे है। 'कीट्स' की प्रसिद्ध कविता 'ओड ऑन ए ग्रसियन अर्न' की सम्पूर्ण प्रेरणा और परिवेश **'क्लोद लोकर'** के एक विशेष चित्र से गृहीत है।[11] **चाल्स ब्रोदलेयर** ने अपनी कविताओं में जिस यथार्थपूर्वक उल्लेख किया है कि ण्स प्रकार ग्रीक मूर्तिकला ने कविता को विषय में जिस यथार्थवाद की

5 अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, भारतीय शिल्प के षडंग – अनुवादक – महादेव साह, नया साहित्य प्रकाशन, 2डी, मिण्टों रोड इलाहाबाद, 1958, पृ. 15

6 अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, भारतीय शिल्प से षडंग, अनुवादक – महादेव साह, नया साहित्य प्रकाशन, 2 डी, मिण्टों इलाहाबाद, 1958, पृ. 25–26

7 सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व, डॉ. कुमार विमल, पृ. 37

8 शैली, ए. डिफेन्स ऑफ पोयट्री कलैक्टेड इन इंग्लिश क्रिटिकल ऐसेज, 19वीं सेन्चुरी, एडिटेड बाई ऐडमण्ड डी. जोन्स, लण्डन, 1950, पृ. 106

9 वाल्टर सार्जेण्ट, डी. इन्ज्वायेमेन्ट एण्ड यूज ऑफ कलर न्यूयार्क, 1923, पृ. 50

10 एम. आर. मजूमदार, दी. गुजराती स्कूल ऑफ पेन्टिग जर्नल ऑफ दी इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट 1942, वॉल्यूम 10, प्लेट्स, 3,6

13 जॉन कीट्स बाई सर सिडनी कॉल्विन, लन्डन 1917

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

यदा–कदा अभिव्यक्ति की है उसकी प्रेरणा उसने कूर्ब की चित्रकृतियों से ग्रहण की है।[12] स्वयं **ब्रोदलेयर** ने कुछ चित्र भी बनाये हैं, जो उसके काव्य के कला पक्ष को उजागर करते है।

रोजोटी ने 1862 ई. के पूर्व दान्ते की कविता के कुछ भावों के अनुरूप चित्र बनाये थे और अपनी कुछ कविताओं की विषयवस्तु पर भी चित्रण किया जिन्हें आधार मानकर निकोलेट ग्रे ने एक ही विषय पर रचित काव्य और चित्रकला का अच्छा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस प्रकार ग्रे ने काव्य और चित्रकला के तात्विक अन्तःसम्बन्धों पर उल्लेखनीय कार्य किया है।[13] **डी.जी. रोजेटी, हल्मन हंट** तथा मिलेस कवि भी थे और चित्रकार भी थे, इन्होंने अपनी कविताओं पर दक्षता के साथ चित्रण भी किया हैं **कीट्स** की भांति **हल्मन हंट** और **मिलेस, शैक्सपियर** की कविताओं से प्रभावित थे। इसीलिए शैक्सपियर के काव्य का कुशल चित्रण किया है।[14] काव्य और चित्रकला के सम्बन्ध में रोजेटी प्रमुख माना जाता है, विद्वानों के मतानुसार रोजेटी के व्यक्तित्व में हम चित्र और काव्य का अद्भुत समन्वय पाते हैं।[15] इसी प्रकार अंग्रेजी में रोमांटिक कवियों के बीच कवि और चित्रकार **'विलयम ब्लैक'** का बहुत ऊंचा स्थान है। इनकी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है प्रतीक विधान। इसीलिए इनके चित्रों में काव्यवत् कल्पना और आध्यात्मिकता अधिक मिलती है। इनकी कविता और चित्रकला में सैद्धान्तिक समानता है, जो इन दोनों कलाओं के अन्तर्समबन्ध को सिद्ध करती है।[16] भारतीय काव्य में **पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा** जी का भी यही स्थान है। इन्होंने अपनी कविताओं का बड़े ही कौशल से चित्रण किया है। इसी तरह रवीन्द्र नाथ ठाकुर की कविताओं और चित्रों के अध्ययन से इन दोनों कलाओं का अन्तःसम्बन्ध सिद्ध होता है। उनकी चित्रकला रेखाओं में रची हुई उनकी कविता ही है।[17] **रवीन्द्र नाथ ठाकुर** के (देखिये चित्र और कविता–1)

कविता –1 रविन्द्रनथा टैगोर

(1) थकी पलकें
इस थकान– भरी रात में मुझे सब कुछ तेरे चरणों पर रख
निश्चिन्तता ओर पूर्ण आश्वासन के साथ अपने रख पस सोने दे।
मेरी क्लान्त और शिथिल शक्तियों को अपनी पूजा के
अर्ध्यसंघय में न लगाना– मेरा थका हारा मनपूजा की उचित तैयारी नहीं
चादर से ढक देता हैं

चित्र–1 रविन्द्रनथा टैगोर

12 चार्ल्स ब्रोदलियर (सैक्टेड पोयम्स) ट्रांसलेटेड बाई जॉफरे वैगरन एण्ड एन इन्ट्रोडक्शन एनिड स्टार्की, लण्डन, 1946, पृ. 11

13 निकोलेट ग्रे. रोजेटी दान्ते एण्ड अवर सेल्वस, फैबर एण्ड फैबर, लण्डन, 1945, पृ. 17

14 असित कुमार हालदार यूरोपेर, शिल्कथा (स्थापत्य, भास्कर्य ओ. चित्रकला) कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रकाशन, पृ. 109–110

15 ल्सूसीन पिसैरो, रोजेटी पब्लिश्ड बाई टी.सी. एण्ड ई.सी. जैक, लण्डन, 11–12

16 विलियम ब्लैक एण्ड हिज इलस्ट्रेशन्स, टू दी डिवाइन कॉमेटी, कलेक्टेड इन एसेज एण्ड इन्ट्रोडक्शन बाई डब्ल्यू बी पीट्स, लण्डन, 1961, पृ. 116

17 फ्रेगमेन्ट फोम ए लैअर वाई रवीन्द्र नाथ टैगोर 4, आर्ट्स एनुअल 1936–37, एडिटेड बाई ए कुमार स्वामी, ओ.सी. गांगुली, कॉरपोरेशन, स्ट्रीट, कलकत्ता।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

इसी श्रेणी में और भी बहुत से भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के चित्र विधान शब्द विधान से प्रतीत होते हैं , जैसे शब्दों की दुनियां में चित्र उपस्थित हो गये हो और चित्रों की दुनियां में शब्द।

यहां मैं कुछ उदाहरण विशेष रूप से दे रही हूॅ जिससे काव्य और चित्र के अन्तःसम्बन्ध और भी स्पष्ट हो जायेगे, जैसे पाश्चात्य प्रसिद्ध चित्रकार, **विन्सेट वानगों** के चित्र संसार और भारत के प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार, **निराला** के कविता संसार को देखना होगा। दोनों अपनी–अपनी कलाओं के महापण्डित थे परन्तु अलग–अलग संस्कृतियों में पले बढ़े,किन्तु दोनो की रसानुभूति एवं बिम्ब विधान एक ही हैं, बस अभिव्यक्ति होने पर माध्यमों के अनुरूप विभक्त हो जाते है। जैसे **दोनो ने सेल्फ पोर्टेट बनाया हैं एक ने शब्दों तो दूसरे ने रंगों से ,** (देखिये चित्र और कविता–2)

कविता –2 निराला

मैं अकेला (सेल्फ पोर्टेट)
देखता हू, आ रही
मेरे दिवस की सान्ध्य बेला
पके आधे बल मेरे,
हुए निष्प्रभ गाल मेरे,
चाल मेरी मन्द होती जा रही,
हट रहा मेला।
जानता हूँ, नदी झरने,
जो मुझे थे पार करने,
कर चुका हूँ, हंस रहा यह देख
कोई नहीं भेला।
––निराला

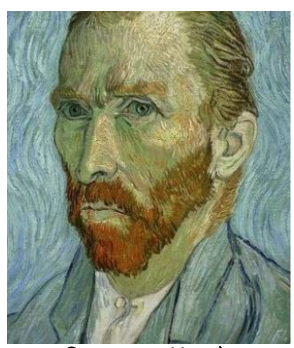

चित्र–2 वॉनगो

इसी प्रकार सभी ललित कलाएं अन्त्स में ही उपजतीं हैं किन्तु प्रमुख रूप से काव्य और चित्र की जुगलबन्दी और स्पष्ट हो रही है। वॉनगों का चित्र **'ओल्ड मैन इन सारो'** और निराला की पंक्तियाँ **''दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहूं आज जो नहीं कहीं''**। जब हम वॉनगों में चित्र को और निराला की इन पंक्तियों को देखते है तो प्रतीत होता है कि चित्र निराला ने बनाया है और शब्दों को वॉनगों ने पिरोया है। यही तो काव्य और चित्र का समिश्रण है। बिम्बों का उदयन अन्तस में होता है। तभी तो सदियों से काव्य और चित्रकला सहभागी रहीं हैं।**(देखिये चित्र और कविता–3)**

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

कविता –3

दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज, जो नहीं कही
———निराला

चित्र–4 ओल्ड मैन इन सारो – वानगो

कविता–4

इतने डरे हुए है वे लोग
कि खतरे को खतरा कहते हुए
जुबान की तरह
खुद लड़खड़ाने लगते है
चेहरे की संतुष्ट सुर्खी
पीली पड़ने लगती है।
आंखे गोल–गोल घूमती हुई
सूघंने लगती हैं
कि आस–पास
कहीं कोई डर तो नहीं।
—— भागवत रावत

चित्र–5 अन्नपूर्णा

क्विता–4

यह जो दीवार घड़ी है
उस पर एक उदास गौरैया
रोज़ शाम से आाकर
गुपचुप बैठ रहती है–
घड़ी की तरह भूरी–मटमैली,

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

दीवार की तरह निरीह–निस्संग।
मं हर बार कहती थीं
इस घड़ी को बदल दो ,
इसमें मुझे समय
पहचाना नहीं जाता ।
एक तो मेरी बूढ़ी आंखें–
उसे देख नहीं पातीं,
दूसरे उसके धंधले अंक
लाख सुनहले हों,
पर मुझे दिखाई नहीं देते ।
––जगदीश गुप्त

चित्र–6 जगदीश गुप्त

चित्र–7 जगदीश गुप्त

इसी प्रकार स्वयं कवियों ने अपनी रचनाओं पर चित्र बनाये है या उनकी रचनाओं पर अन्य शब्द कारों ने शब्दों से फलक उकेरे हैं।

यहां मैं इस बात को स्पष्ट कहना चाहती हूँ कि कवि हो या चित्रकार अनुभूति के स्तर पर वह एक ही होता है। चाहे वह समुद्र पार का ही क्यों न हो, कहने का तात्पर्य यह है कि चित्र और काव्य की जुगलबन्दी अनन्त काल से चली आ रही है और सम सामयिक संदर्भों में वह और भी स्थायित्व पा रही है। जो सामाजिक परिप्रेक्ष में राष्ट्र हित के लिये अति आवश्यक है । **महादेवी** की चित्रात्मक कविताओं के अध्ययन से, **अज्ञेय** की चित्रात्मक कविताओं के अध्ययन से और **जगदीश गुप्त** की चित्रात्मक कविताओं के अध्ययन से काव्य चित्र की गहरायी का और भी स्पष्टीकरण हो जाता है। काव्य और चित्र की जुगलबन्दी कुछ इस प्रकार से है जो सम्वेदनिय पन्नों को खोलती है **'भगवत रावत'** अपने समय के सहज और सामाजिक विभीषिकाओं को सम्वेदनिय बिम्बों में पिरोने वाले रचनाकार रहें हैं इनकी रचनाओं पर मेरी रेखाओं का संयोजन इस बात को और प्रभावशाली बनाता है।(देखिये –कविता–4,चित्र–5) कि संवेदनशीलता ही बिम्बों को स्पष्टता प्रदान करती है। इसलिए संवेदनशील चित्रकार, कवि की भावानुभूति संवेदनीय स्तर पर लगभग समीपस्थ हो जातीं है अर्थात् साधारणीकरण हो जाता है । एक कवि या रचनाकार एक दूसरे की काव्य रचना या चित्र रचना को अपनी अनुभूति से अपने अनुरूप फलक पर तूलिका या कलम से अंकित कर देता है जिससे काव्य और चित्र समानान्तर प्रतीत होने लगतें हैं। जुगलबन्दी की सार्थकता का स्पष्टीकरण इस बात से हो जाता है कि अनेक कवियों ने चित्रों पर अपनी कलम चलायी है कुछ उदाहरण इस प्रकार है– **मैथिलीशरण गुप्त,भागवत रावत,शमशेर बहादुर सिंह, (कविता–5,6,7, चित्र–8)**आदि

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

कविता–5,
मैथिलीशरण गुप्त

कला
आ, नव–नव निर्देश धरे!
अयि करुणामीय कले, कल्पनाकलित ललितम धरे।
तेरी खींची रेखाओं में क्या क्या अंकित नहीं हुआ है ?
चमन उठा वह भीतर बाहर ज्यों ही तूने जिसे छुआ।
बहुरंगिणी, तेरे रंगों में कहां कौन रस कब न चुआ।

कविता–6,
भावागत रावत

मानव संग्रहालय
मिट्टी की दीवार पर एक अपढ़ और
लिख रही है मिट्टी का सूरज मिट्टी का चांद
मिट्टी के पेड़–पौधे– जानवर
झाबुआ से मजदूरी करते आई वह लिख रही है।
पढ़े–लिखे लोगों के लिए
भोपाल की पहाड़ी पर
जहां मानव संग्रहालय बनाया जा रहा है।
कलाभिरुचियों से लदी कारों और जीपों से झांकती,
उत्सुक आंखे देखती है।
जैसे हो रहा कोई अजूबा चमत्कार

कविता–7,
शमशेर बहादुर सिंह

फान गॉग(वेनगोग का एक चित्र
(जो अज्ञेय की ड्राइंगरूम में कभी देखा गया।)
सोने का एक ज्वार उठा,,,,,,
और
गहरे नीले अनगिन पंखों से
नीले अनगिन के फेनिल पंखों से
उसे ढांप लेने को
व्यर्थ– व्यर्थ ,,,,,,
उठा बवण्डर,
जिधर देखो उधर वह
गहरी सुनहरी मौज
मौज में है
दूर–दूर तक
और एक नन्ही –बटिया– सा मैं।
उसी में
खो गया
चिड़ियों की डार जैसे
तीर सी उड़ती आये

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

और घने झुरमुटों में कहीं
खो जाये
ज्वार—————— दूर दूर दिशाओं में
हर ——हर करता
अपर नीचे
चारों ओर
इसलिए तमसा —से काले काग
झुंड—के— झुंड ग हरे नीले — काले
काक—— रोर करते
ढक लेने से
मानो छा ही लेंगे उसे
लाल हो जायें वे ज्वार को ।

चित्र—8,वानगो

अज्ञेय की **असाध्य वीणा के शब्द चित्र हैं जिसे मैंने अपनी रेखाओं समेंटने का सफल प्रयास किया है। (कविता—8,चित्र—9,10,11,12)**

कविता—8, **अज्ञेय**
असाध्य वीणा

,,,,,,,,,,,,किन्तु सुना
वज्रकीर्ति ने मन्त्रभूत जिस
अति प्राचीन किरीटी तक से इसे गढ़ा था
उस के कानों में हिम — शिखर रहस्य कहा करते थे अपने,
कन्धों पर बादल सोते थे,
उस की करि शुण्डों—सी डाले
हिम वर्षा से पूरे वन—यूथों का कर लेती थी परिश्रम,

चित्र—9, अन्नपूर्णा

केश कम्बली गुफा—गेह ने खोला— कम्बल।
धरती पर चुप—चाप बिछाया।
वीणा उस पर रख, पलक मूंद कर प्राण खींच,
कर के प्रणाम,

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

अस्पर्श छुअन से छुए तार।
धीरे बोला 'राजन्! पर मैं तो
क्लान्त हूँ नहीं, शिष्य साधक हूँ
जीवन के अनकहे सत्य का साक्षी।
वज्रकीर्ति !
प्राचीन किरीटी तक!
अभिमन्त्रित वीणा!
ध्यान – मात्र इन का तो गद्गद विह्वल कर देने वाला है।
चुप हो गया प्रियंवद।
सभा की मौन में रही।
वाद्य उठा साधक ने गोद रख लिया।
धीरे–धीरे झुक उस पर, तारों पर मस्तक टेक लिया

चित्र–10, अन्नपूर्णा

सभा चकित थी– अरे, प्रियंवद क्या सोचा है ?
केश कम्बली अथवा हो कर पराभूत।
झुक गया वाद्य पर ?
वीणा सचमुच क्या है ? असाध्य ?
पर उस स्पन्दित सन्नाटे में
मौन प्रियवंद साध्य रहा था वीणा
नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा था।

चित्र–11, अन्नपूर्णा

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

संगीतकार
वीणा को धीरे से नीचे रख, ढंक ,मानो
गोदी में सोये शिशु को पालने डाल कर मुग्धा मां
हट जाप, दीप से दुलराती–
उठखड़ा हुआ।
बढ़ते राजा का हाथ उठा करता आवर्जन
बोला
श्रेय नहीं कुछ मेराः
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था।
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का थाः
वह तो सब कुछ ही तथता थी
महा शून्य
वह महामौन
अति भाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्द हीन
सब में गाता है

चित्र–12, अन्नपूर्णा

महादेवी जी ने काव्य कला की जुगलबन्दी को ध्यान में नही रखा होगा फिर भी उनकी अति सम्वेदनशीलता ने चित्रों कों अपना माध्यम बना ही लिया। यहां एक बात स्पष्ट करदूं कि कोई भी ललित कला हो सबसे पहले वो बिम्ब अर्थात चित्र रूप में ही अन्तस में आतें हैं। **महादेवी** जी ने अपनी पुस्तक **'दीप शिखा'** की भूमिकाओं में कला और चित्र के विषय में विचारों को व्यक्त किया हैं –''कलाओं में चित्र ही काव्य का अधिक विश्वस्त सहयोगी होने की क्षमता रखता है। मूर्ति कठिनता की सीमाओं में बंधी होने के कारण रंगों की पृष्ठभूमि असम्भव कर देती है। उसमें एक ही भाव की मूर्तिमत्ता दी जा सकती है और वह भी रंगहीन।

नृत्य भी शरीर की चेष्टाओं पर आश्रित होने के कारण मूर्ति के बन्धनों से सर्वथा मुक्त नहीं। वह एक प्रकार का अभिनीत गीत हैं, भौतिक आधार अर्थात् स्थूल माध्यम से स्वतंत्र संगीत काव्य के अधिक निकट है, परन्तु अपनी ध्वनि सापेक्षता के कारण वह काव्य को दृष्टि का विषय बनाने में समर्थ नहीं हैं ।
माध्यम की दृष्टि से चित्र, सूक्ष्म और स्थूल मध्य में स्थिति रखता है। देश सीमा के बन्धन रहते हुए भी वह रंगों की विविधता और रेखाओं की अनेकता के सहारे काव्य को रंग रूपात्मक साकारता दे सकता है। अमूर्त भावों का जितना मूर्त वैभव चित्रकला में सुरक्षित रह सकती हैं। उतना ही किसी अन्य कला में सहज नहीं,

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

इसी से हमारे प्राचीन चित्र जीवन की स्थूलता को जितनी दृढ़ता से संभाले है, जीवन की सूक्ष्मता को भी उतनी ही व्यापकता में बान्धे हुए हैं।''

ललित कलाओं की तात्विक जुगलबन्दी से पता चलता है कि लगभग सभी देशों के विद्वानों ने इनके अन्तःसम्बन्धों पर बड़ी गहरायी से विचार किया है। साथ ही साथ काव्य और चित्रकला के अन्तःसम्बन्धों पर विशेष बल दिया है। बल स्वाभाविक भी है क्योंकि आदि काल से ही रेखा और शब्द का अटूट सम्बन्ध रहा है। कालान्तर में यह सम्बन्ध बढ़ता ही गया। कहीं–कहीं तो ऐसा लगता है कि चित्रकला काव्य की शक्तियों में से एक शक्ति रही है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने से लगता है कि काव्य के साधारणीकरण का कार्य भी चित्रकला ने बड़े ही स्वाभाविक ढंग से किया है। भारतीय चित्रकला का मूल्यांकन बिना काव्य के हो ही नहीं सकता। क्योंकि काव्य की सभी विधाओं का प्रभाव चित्रकला पर स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है। काव्य के अनुसार भारतीय चित्रकला का भी अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। आगे चलकर अवश्य यह पाश्चात्य काल से प्रभावित हुई। यह बदलाव ''स्वच्छन्दतावाद'' से प्रारम्भ हुआ। चित्रकला ही नहीं काव्य पर भी पाश्चात्य प्रभाव पड़ा। काव्य और चित्रकला के सम्बन्धों को देखने के लिए इनकी समानान्तरता के अन्य आयामों को देखना होगा।

सभी ललित कलाओं का प्राण तत्त्व काव्य ही है। भाषा से पहले यह तत्त्व विविध स्थूल माध्यमों से व्यक्त होता रहा हैं कृतियों की कलात्मकता इसी तत्त्व पर आधारित है। जिस कला में काव्य तत्त्व अधिक व्यक्त हो जाता है, वह काव्य के अधिक निकट होता है। इसीलिए चित्रकला काव्य के अधिक निकट है और इसी काव्य तत्व के कारण ही सभी ललित कलाओं का तात्विक अन्तःसम्बन्ध हैं। इसीको कला मनीषियों ने सिद्ध किया है।

भाषा के माध्यम से ही ''सौन्दर्यबोध'' की परिपूर्णता की अभिव्यक्ति संभव है। ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार ''सौन्दर्यबोध'' के तीन स्तर है। प्रथम स्तर वह है जहां हमें इन्द्रियों द्वारा सुन्दर का परिचय मात्र होता है। यह गोचर होता है । इससे उच्चतर स्तर वह है जो अगोचर होता है ,जो एक आन्तरिक अनुभूति है। सबसे उच्चतम स्थिति वह है, जहाँ चित्त का सौन्दर्य में समावेश हो जाता है।''[18] इस स्तर की सौन्दर्यानुभूति शब्दों के माध्यम से ही सम्भव है।

इस प्रकार चित्र के लिए काव्य का ज्ञान और काव्य के लिए चित्र का ज्ञान अति आवश्यक बताया गया हैं तभी इन दोनों की जुगलबन्दी सम्भव हो पायी है।यहॉ मैंने कुछ अपनी कवितायें और रेखाचित्र इस लिये प्रस्तुत करने की आवश्यकता महसूस की, कि जन मानस तक ये विश्वास पहुचें कि जब हम समभाव से सम्वेदनिय स्थिति में आकर ललित कलाओं का पोषण करतें हैं तो वह स्वतः आप के अन्त्स में बिम्ब रूप में आकर अनेक माध्यमों में व्यक्त होने लगतीं हैं। **(कविता–9,10, देखिये चित्र–13,14)** येही समभाव समाज और समय की उन विभीषिकाओं,को भी जिनसे व्यक्ति विशेष सामाजिक दायरे में फंसा रहता है। कवि या कलाकार अपनी तूलिका या कलम में समेट पाता है और समाज में बदलाव ला पाता है।

''कला की ये दोनों सूक्ष्म कोटियाँ है जो इन जटिलताओं की महीन तन्तुओं को पकड़ती है। इस पूरे परिप्रेक्ष्य को देखते हुए आज हम जब उत्तर आधुनिक समाज में रह रहे है, जरुरत इस बात की है कि कला और कविता के सरोकार मिले और परस्पर वे समतुल्य होते हुए मनुष्य और समाज के एकल अनुभव से इस सम्पूर्ण मानवीय

18 ''भारतीय संस्कृति में ललित कला का महत्ता'', ठाकुर जयदेव सिंह, पृ. 7

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585022

कविता–9

–तपती दोपहरी–

जेठ की दोपहरी ,
तार तार होती जिन्दगी,
कमर तक धोती,
सर पर ईंटों का बोझ,
तन बदन पसीने से लबालब,
दरख्त कहां गुम से हो गये ,
सूनी आंखें लक्ष्य तक–
पहुंचने के लिये बेचैन,
तपता जेठ की दोपहरी ,
चटक चटक जाती धरती ,
जलता अलाव सा अपना ही बोझ,
फिर भी तपन को सहती–
तार तार होती जिन्दगी,
आगे बढती–
दोपहरी को ढकेलते हुए।

––अन्नपूर्णा

चित्र–13, अन्नपूर्णा

कविता–10

दरख्त और परिन्दे–

सूखे दरख्त के सपने तो चूर चूर हुए–
और सपने उन परिन्दों के भी टूटे,
जो ढूंढते रहे आशियाना बनाने को –
थोड़ी सी बस थोड़ी सी छावं,
तरस गया जीवन एक बून्द के लिए
सारे साज धरे के धरे ही रह गये,
उम्मीदों का पानी तो सुखा ही था–
अब तो ऑखों का पानी भी मर गया,
झमाझम बरसते बादल–
अब तो कड़क कर दिल दहला जातें हैं –
हम इन्सानों के।
फिर भी हम चेते नहीं,
जब हमको पेंड़ों की आदतें खत्म,

तो पेंडों को हमारी आदतें खत्म,
दोस्तों !
पेंड तो जंगल को संवार लेंगे,
पक्षी आशियाने भी बना लेंगे
पर, हम इन्सान
इन ईंटों के जंगल में ही –
दम तोड़ते नजर आयेंगे।
––अन्नपूर्णा

चित्र–14,अन्नपूर्णा

अनुभव की व्याख्या करें और उसकी प्रक्रिया की पड़ताल भी करे।''[19] तभी काव्य और चित्र की जुगलबन्दी की सार्थकता सिद्ध होगी।

सम्पूर्ण विश्व के जनमानस के अन्तस में सम्वेदनशीलता का बोध होगा, तभी सौन्दर्यबोध और सृजनशीलता का विकास होगा।

[19] समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, कला चिन्तन, पृ. 10, कला कविता पर उसका अंकन 15–16, सं. ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भव, नई दिल्ली